

EDITORIAL

भारत की भौगोलिक विविधता और विशालता (सांस्कृतिक और ऐतिहासिक) का वर्णन विष्णु पुराण में इस प्रकार किया गया है,

**“उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्,
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः”**

अर्थात् समुद्र के उत्तर और बर्फीले पहाड़ों के दक्षिण में स्थित देश को भारत के रूप में माना जाता है और यहीं राजा भरत के वंशज रहते हैं। वास्तव में, भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधताएँ लोकप्रिय कहावत -

“कोस कोस पे पानी बदले, चार कोस पे बानी”

(अर्थात् पानी का स्वाद हर एक मील के बाद बदलता है, जबकि बोली हर चार मील के बाद बदलती है) में प्रतिध्वनित होती है। भारत की भौगोलिक विविधता, संस्कृति, परंपरा और दीर्घकालिक विरासत उसे एक अद्वितीय पर्यटन स्थल बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति के संदर्भ में पर्यटन की अवधारणा को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों में सांस्कृतिक पर्यटन और साझा संस्कृति तथा विरासत के विस्तार की काफी संभावनाएं हैं। इन दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी हैं फलस्वरूप विभिन्न भौगोलिक विभिन्नताओं के उपरांत भी यहाँ के समुदायों के बीच सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आदान-प्रदान होता रहा है। वास्तव में, गिरमिटिया जैसे समुदाय, जिन्हें उपनिवेशवादियों द्वारा फिजी, ब्रिटिश गुयाना, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) इत्यादि देशों में ले जाया गया और वहाँ के बागानों में काम करने के लिए मजबूर किया गया। उन्हें वहाँ उस उजाड़ और सांस्कृतिक परिवेश में रहना पड़ा, उन्हें वहाँ स्वतंत्रता और मजबूत सांस्कृतिक पहचान के अभाव को भी सहना पड़ा। धीरे-धीरे इन देशों में उन्होंने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का नींव रखी और आज वहाँ भारतीय सभ्यता एवं

संस्कृति फल-फूल रही है। इन देशों के अतिरिक्त बहुत से ऐसे भी देश हैं जो भारतीय संस्कृति से प्रभावित हैं।

पिछले दशक में, सरकार ने भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए अपने नागरिकों में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना जगाने के लिए अथक प्रयास किया है। उत्तराखंड (देवभूमि), लक्षद्वीप और अरुणाचल प्रदेश में सांस्कृतिक और विरासत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार की तरफ से पहल भारतीय पर्यटन को बढ़ावा देने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है, जिससे भारत की सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ आर्थिक विकास भी जोर पकड़ेगा। यह बिना किसी संघर्ष या शक्ति के प्रयोग के ही देश के आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए व्यापक अवसर प्रदान कर सकता है। उदाहरण के लिए, सारनाथ, बोध-गया, वैशाली और नालंदा जैसे बौद्ध पर्यटन स्थल दुनिया भर में बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विदेश नीति के अंतर्गत आंतरिक संबंधों के दृष्टिकोण से, ये स्थान दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों और अन्य बौद्ध बहुल राष्ट्रों अथवा समुदायों के साथ हमारे सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए क्षेत्रीय केंद्र (सॉफ्ट पावर सेंटर) के रूप में कार्य कर सकते हैं। कूटनीति अब केवल सरकारी मशीनरी से जुड़ी नहीं है, अपितु वर्तमान परिदृश्य में यह समाज के विभिन्न स्तरों तक पहुंच गई है। पर्यटन ने छोटे गांवों, स्थलों और दूरदराज के क्षेत्रों को राष्ट्रीय विकास में सक्रिय भागीदार बनाकर सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। पिछले कुछ वर्षों में, पर्यटन के क्षेत्र में व्यापक बदलाव आया है और कुछ देशों की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से इस क्षेत्र पर निर्भर करती है।

भारत सांस्कृतिक धरोहर का भंडार है। अन्य देशों के इतिहास का ज्ञान (दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापक सांस्कृतिक-संबंध) बेहतर अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए पर्यटन को बढ़ावा देने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। इसके लिए विभिन्न चुनौतियों का समाधान कर एक मजबूत सांस्कृतिक पहचान के साथ दीर्घकालिक पर्यटन विकसित करना है। समय

की मांग है कि पर्यटन के कूटनीतिक पहलू को समझा जाए और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ मजबूत संबंध बनाई जाए । साझा सांस्कृतिक स्मृतियों को फिर से जगाने से सांस्कृतिक संपत्तियों का विकास होगा, जिसमें इन देशों के लाखों लोगों के जीवन को बदलने की क्षमता है । आज शिक्षाविदों, विद्वानों, सामाजिक विचारकों और अन्य हितधारकों को इस पर संवाद शुरू करने की आवश्यकता है, जो नयी बदलती हुई बहुध्रुवीय वैश्विक-संरचना में भू-राजनीतिक संबंधों को और भी सशक्त बनाने की एक पहल होगी । आवश्यकता है एक शैक्षणिक चर्चा एवं प्रशिक्षण रूप में पर्यटन कूटनीति को बढ़ावा देने की ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोक-संबंधों को सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में सतत व्यापक गहराई दी जा सके ।

